CBSE Test Paper 02

Ch-14 बच्चे काम पर जा रहे हैं

1. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

   कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
   सुबह सुबह बच्चे काम पर जा रहे हैं
   हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
   भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
   लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह
   काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

   i. कवि ने किस समस्या की ओर समाज का ध्यान आकर्षित कराना चाहा है?
   ii. 'भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना' कवि ने ऐसा क्यों कहा है?
   iii. बच्चों को काम पर जाना किस-किसके लिए लाभप्रद है और कैसे?

2. बच्चे काम पर जा रहे हैं कविता के आधार पर बताइए तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ऐसा प्रश्न कवि कब और क्यों करता है?

3. **दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए** कहकर कवि ने किस ओर संकेत किया है? बच्चे काम पर जा रहे हैं कविता के आलोक में लिखिए।

4. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

5. बच्चे काम पर जा रहे हैं कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।

6. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

CBSE Test Paper 02

Ch-14 बच्चे काम पर जा रहे हैं

Answer

1. i. कवि ने समाज का ध्यान बाल मजदूरी की आकर्षित कराना चाहा है। काम करना बच्चों की विवशता है।
   ii. कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि बच्चे भी देश का भविष्य होते हैं। पर समाज और समाज के तथाकथित ठेकेदार बाल श्रम की समस्या को देखकर भी अनदेखा कर रहे हैं।
   iii. बच्चों का काम पर जाना तो किसी के लिए भी लाभप्रद नहीं है। बच्चे विवशता के कारण काम कर रहे हैं | इससे वे न तो कुशल नागरिक बन पाएँगे और न ही समाज तथा देश की उन्नति में अपना योगदान दे पाएँगे।
2. 'तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?' यह प्रश्न कवि तब करता है जब वह बहुत छोटे-छोटे बच्चों को काम पर जाने को विवश पाता है। ये बच्चों के खेलने और पढ़ने के दिन हैं। क्या किताबें, खिलौने, गेंदें विद्यालय आदि नष्ट हो गए हैं? यदि हाँ तो दुनिया में जीने के लायक कुछ भी नहीं बचा है। पर दुःख तो इस बात का है कि सब कुछ यथावत है फिर भी बच्चे काम पर जा रहे हैं।
3. 'दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए' कहकर कवि ने बाल मजदूरी जैसी व्यापक समस्या की ओर संकेत किया है। यह समस्या किसी समाज या देश विशेष की न होकर पूरे विश्व की समस्या है। गरीबी के कारण सारी दुनिया में लाखों-करोड़ों बच्चे बाल श्रमिक बनने को मजबूर हैं। उनकी इसी विवशता ने उनसे उनका बचपन छीन लिया है। अतः काम पर जाना उनकी मजबूरी बन गया है।
4. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाता हुआ देख रहा है फिर भी उन्हें कुछ भी अटपटा नहीं लगता और वे इस ओर से उदासीन हैं। इनके उदासीनता के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं -
   i. लोग आत्मकेंद्रित हो गए हैं उनका सोचना है कि चलो मेरा बच्चा तो काम पर नहीं जा रहा है।
   ii. लोग इसके प्रति जागरूकता नहीं दिखाते हैं। वे सोचते हैं कि यह तो सरकार की समस्या है |
   iii. समाज का एक बड़ा वर्ग इन बच्चों से काम कराकर मुनाफा कमाकर अपनी जेब भर रहा है, तो वह इस बारे में क्यों सोचे।
5. कविता की पहली दो पंक्तियाँ पढ़कर हमारे मन में बच्चों के प्रति करुणा तथा व्यवस्था के प्रति आक्रोश का भाव जाग्रत होता है। सर्दी तथा कोहरे में बच्चों को घर में होना चाहिए। यह उम्र उनके खेलने-कूदने की है। उन्हें पढ़ने के लिए विद्यालय जाना चाहिए और खेलना चाहिए। पर यह बच्चों की विंडबना ही है कि इस उम्र में उन्हें अपनी जीविका चलने के लिए काम पर जाना पड़ रहा है। पता नहीं इस राष्ट्रीय समस्या का समाधान कब होगा।
6. बच्चों का काम पर जाना धरती पर एक बड़े हादसे के समान है क्योंकि बच्चे राष्ट्र का भविष्य होते हैं। जिस उम्र में बच्चों को पढ़ना-लिखना चाहिए तथा भविष्य का योग्य एवं सुशिक्षित नागरिक बनने की तैयारी करनी चाहिए, वे उस उम्र में बाल-मजदूरी करते हुए अपना भविष्य नष्ट कर रहे हैं। इस प्रकार न तो कोई समाज अपनी उन्नति कर सकता है और न ही देश। ऐसे देश का भविष्य निश्चित ही सुरक्षित नहीं है इसलिए बच्चों का भविष्य नष्ट होना किसी हादसे से कम नहीं है।